04/05/2024

शामिल विषय

1. भारत के वैश्विक उत्थान का विरोधाभास, इसकी क्षेत्रीय गिरावट (4 मई) (जीएस पेपर II: आईआर)
2. यह सतत विकास लक्ष्यों को पटरी पर लाने का वर्ष है (4 मई) (जीएस पेपर III: पर्यावरण)
3. यौन अपराध और वीडियो: कर्नाटक में प्रज्वल रेवन्ना मामले पर (4 मई) (जीएस पेपर I: सोसायटी)

ममता ने कहा, राज्यपाल के खिलाफ आरोपों पर मोदी चुप रहे (4 मई) (जीएस पेपर II: राजनीति)

- मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने पश्चिम बंगाल के राज्यपाल सीवी आनंद बोस पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगाने वाली महिला के प्रति सहानुभूति व्यक्त की।
- ममता बनर्जी ने महिला के आंसुओं को दिल दहला देने वाला बताया और उसकी वीडियो गवाही देखने का जिक्र किया.
- उन्होंने भाजपा की आलोचना करते हुए पूछा कि राज्यपाल ने राजभवन में काम करने वाली एक महिला को कथित तौर पर क्यों परेशान किया।
- तृणमूल कांग्रेस ने सवाल उठाया कि राजभवन का दौरा करने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस मुद्दे पर बात क्यों नहीं की।
- राजभवन में संविदा कर्मचारी महिला ने राज्यपाल पर उत्पीड़न का आरोप लगाते हुए कोलकाता पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है।
- संविधान का अनुच्छेद 361 राज्यपाल को आपराधिक कार्यवाही से उन्मुक्ति प्रदान करता है।
- गवर्नर ने आरोपों को "बेतुका नाटक" बताकर खारिज कर दिया तथा भ्रष्टाचार को उजागर करने और हिंसा को कम करने के प्रयास जारी रखने की शपथ ली।

भारत में प्रेस स्वतंत्रता का स्कोर पिछले वर्ष की तुलना में गिरा: आरएसएफ (4 मई) (प्रारंभिक)

PatrioticIAS

विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक (WPFI) यह रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स (आरएसएफ) द्वारा प्रकाशित एक वार्षिक रैंकिंग है, जो सूचना की स्वतंत्रता की वकालत करने वाला एक अंतरराष्ट्रीय गैर-लाभकारी संगठन है। 2002 से, WPFI ने दुनिया भर के 180 देशों और क्षेत्रों में प्रेस की स्वतंत्रता की स्थिति का आकलन किया है।

यह क्या मापता है?

WPFI सीधे प्रेस की स्वतंत्रता को नहीं मापता बल्कि पत्रकारिता के लिए माहौल का आकलन करता है। यह मूल्यांकन कई कारकों पर विचार करता है जिनमें शामिल हैं:

- बहुलवाद - मीडिया स्वामित्व और दृष्टिकोण की विविधता
- मीडिया स्वतंत्रता - सरकारी, राजनीतिक या वाणिज्यिक प्रभाव से स्वतंत्रता
- मीडिया वातावरण और स्व-सेंसरशिप - पत्रकारों के समक्ष आने वाली धमकियाँ, उत्पीड़न और धमकी
- विधायी ढांचा - प्रेस की स्वतंत्रता को प्रभावित करने वाले कानून और विनियमन
- पारदर्शिता - सरकार का खुलापन और सूचना तक पहुंच

इसकी रैंकिंग क्या है?

आरएसएफ प्रत्येक देश के लिए स्कोर निर्धारित करने के लिए मीडिया पेशेवरों, वकीलों और मानवाधिकार कार्यकर्ताओं द्वारा भरे गए प्रश्नावली का उपयोग करता है, साथ ही पत्रकारों के साथ दुर्व्यवहार पर मात्रात्मक डेटा का उपयोग करता है। उच्च स्कोर अधिक प्रेस स्वतंत्रता का संकेत देते हैं।

- रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स (आरएसएफ) की रिपोर्ट के अनुसार, विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक में भारत का स्कोर पिछले वर्ष 36.62 से घटकर 31.28 हो गया।
- हालाँकि, भारत की रैंकिंग 2023 में 161 से बढ़कर 2024 में 159 हो गई, जिसका मुख्य कारण अन्य देशों की रैंकिंग में गिरावट है।
- भारत सरकार ने ऐतिहासिक रूप से अंतर्राष्ट्रीय स्वतंत्रता रैंकिंग को गलत सूचना और दुष्प्रचार से प्रेरित बताकर खारिज कर दिया है।
- प्रेस स्वतंत्रता के मामले में नॉर्वे और डेनमार्क सर्वोच्च स्थान पर हैं, जबकि इरीट्रिया निम्नतम स्थान पर है, तथा सीरिया उससे थोड़ा ऊपर है।
- आरएसएफ ने इस बात पर प्रकाश डाला कि विश्व स्तर पर प्रेस की स्वतंत्रता को राजनीतिक अधिकारियों द्वारा खतरा है, जिसमें औसतन 7.6 अंक की गिरावट आई है।
- प्रेस की स्वतंत्रता के लिए आरएसएफ की प्रश्नावली में राजनीतिक, कानूनी, आर्थिक, सामाजिक-सांस्कृतिक और सुरक्षा संदर्भ शामिल हैं।
- सुरक्षा को छोड़कर सभी श्रेणियों में भारत का स्कोर खराब हुआ।
- आरएसएफ ने 2014 में नरेंद्र मोदी के सत्ता में आने के बाद से भारत में प्रेस की स्वतंत्रता में गिरावट के लिए "आपातकाल की अनौपचारिक स्थिति" को जिम्मेदार ठहराया, और भाजपा और प्रभावशाली मीडिया परिवारों के बीच मधुर संबंध का आरोप लगाया।
- "गोदी मीडिया" शब्द का उपयोग उन मीडिया आउटलेट्स का वर्णन करने के लिए किया जाता है जिन्हें लोकलुभावनवाद और भाजपा समर्थक प्रचार का मिश्रण माना जाता है।
- आरएसएफ की इंडिया कंट्री रिपोर्ट के अनुसार, सरकार की आलोचना करने वाले भारतीय पत्रकारों को भाजपा समर्थित ट्रोल्स के उत्पीड़न अभियानों का सामना करना पड़ता है।
- आरएसएफ में अभियान निदेशक रेबेका विंसेंट ने प्रेस की स्वतंत्रता के संबंध में भारत में चुनावों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला।
- उन्होंने इस धारणा पर गौर किया कि भारतीय अधिकारी विशेष रूप से चुनाव के दौरान बड़े पैमाने पर दुष्प्रचार और प्रचार में लगे हुए हैं।

PatriotiCAS

- विंसेंट ने अमेरिका में प्रेस की स्वतंत्रता की स्थिति पर चिंता व्यक्त की, विशेष रूप से वहां के विकास के वैश्विक प्रभाव के कारण।
- ट्रम्प के राष्ट्रपतित्व के दौरान, मीडिया को अक्सर राज्य के दुश्मन के रूप में लेबल किया जाता था, जिससे प्रेस की स्वतंत्रता नकारात्मक रूप से प्रभावित होती थी।
- आरएसएफ सूचकांक के अनुसार अमेरिका का प्रेस स्वतंत्रता स्कोर 71.22 से गिरकर 66.59 हो गया और इसकी रैंकिंग 45 से गिरकर 55 हो गई।

भारत के वैश्विक उत्थान का विरोधाभास, इसकी क्षेत्रीय गिरावट (4 मई) (जीएस पेपर II: आईआर)

इस द्वंद्व का नई दिल्ली की वैश्विक आकांक्षाओं पर गहरा प्रभाव है

- **भारत अपनी विदेश नीति में एक विरोधाभास का अनुभव कर रहा है जहां विश्व स्तर पर इसकी शक्ति बढ़ रही है लेकिन क्षेत्रीय स्तर पर इसकी शक्ति में गिरावट आ रही है।**
- **आर्थिक विकास, सैन्य क्षमताओं और युवा आबादी** जैसे कारकों से प्रेरित है ।
- **जी-20** जैसी वैश्विक संस्थाओं में भारत की उपस्थिति और **क्वाड और ब्रिक्स** जैसे बहुपक्षीय समूहों में इसकी भागीदारी इसके भू-राजनीतिक महत्व को उजागर करती है।
- **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का सदस्य नहीं होने के बावजूद, भारत का वैश्विक प्रभाव बढ़ रहा है** , एक महत्वपूर्ण वैश्विक शक्ति होने के अपने दावों के प्रति सहकर्मी समायोजन बढ़ रहा है।
- **हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भारत की भूमिका ध्यान आकर्षित कर रही है,** क्योंकि यह भौगोलिक और रणनीतिक रूप से केंद्रीय स्थान रखता है।

- **हालाँकि, क्षेत्रीय स्तर पर, चीन के सापेक्ष भारत की शक्ति कम होती जा रही है, तथा क्षेत्र की भू-राजनीति में परिवर्तन के कारण यह दक्षिण एशिया में अपनी प्रधानता खो रहा है।**

बाह्य कारक

- भारत के वैश्विक उत्थान के साथ-साथ दक्षिण एशियाई क्षेत्र में इसके प्रभाव में भी गिरावट आई है।
- **यह गिरावट निरपेक्ष नहीं बल्कि तुलनात्मक है,** क्षेत्र में भारत के पिछले प्रभाव की तुलना चीन के वर्तमान प्रभाव से करने पर यह बात स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।
- **भारत के प्रभाव में कमी लाने वाले कारकों में इस क्षेत्र से अमेरिका का हटना तथा इसके परिणामस्वरूप उत्पन्न शक्ति शून्यता को भरने के लिए चीन का विस्तार करना शामिल है।**
- विडंबना यह है कि भारत की वैश्विक प्रमुखता के पीछे कुछ कारक, जैसे चीन को संतुलित करने के लिए भारत को अपने साथ शामिल करने में अमेरिका की बढ़ती रुचि, भी इसके क्षेत्रीय पतन में योगदान करते हैं।
- इंडो-पैसिफिक पर भारत के फोकस ने, वैश्विक ध्यान आकर्षित करते हुए, अपने महाद्वीपीय पड़ोस से ध्यान और संसाधनों को दूर कर दिया है।
- **जबकि भारत का वैश्विक उत्थान पूर्ण शक्ति से प्रेरित है** प्रमुख शक्तियों की वृद्धि और भू-राजनीतिक विकल्प, इसकी क्षेत्रीय गिरावट तुलनात्मक शक्ति की गतिशीलता और छोटी क्षेत्रीय शक्तियों द्वारा चुने गए विकल्पों से प्रभावित होती है।
- **संतुलन कृत्यों की अनदेखी** केवल महान शक्ति संतुलन पर ध्यान केंद्रित करने के पक्ष में छोटी क्षेत्रीय शक्तियों का विरोध प्रतिकूल हो सकता है।

चीन का उदय और भारत को क्या करना चाहिए

- भारत की शक्ति में समग्र वृद्धि के बावजूद, क्षेत्रीय प्रभाव में भारत की गिरावट को समझाने वाला प्राथमिक कारक चीन का उदय है।
- इतिहास में चीन की तुलना में भारत की सापेक्षिक कमजोरी का कारण चीन का भारत के पड़ोसी के रूप में उभरना है।
- बदलाव **दक्षिण एशिया में अपनी बढ़ती उपस्थिति, क्षेत्र से अमेरिका की वापसी और भारत के हिंद-प्रशांत क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करने के कारण चीन के पक्ष में है।**
- **छोटे दक्षिण एशियाई देश इस नए शक्ति समीकरण के जवाब में संतुलन, सौदेबाजी, बचाव और बैंडवैगनिंग जैसी विभिन्न रणनीतियों को अपना रहे हैं।**
- **भारत के पड़ोसी देश चीन को भारत के प्रभाव के विरुद्ध एक उपयोगी बचाव के रूप में देखते हैं, जो इस क्षेत्र पर भारत की पकड़ को कमजोर करने में योगदान दे रहा है।**
- भू-राजनीतिक संरचना के रूप में दक्षिण एशिया का अप्रचलित होना इस क्षेत्र में भारत के प्रभाव को और अधिक चुनौती देता है।
- इस चुनौती से निपटने के लिए , **भारत को इस क्षेत्र की अपनी पारंपरिक अवधारणाओं का पुनर्मूल्यांकन करने तथा दक्षिण एशिया में अपनी प्रधानता बनाए रखने के लिए अपने दृष्टिकोण को आधुनिक बनाने की आवश्यकता है।**
- **क्षेत्र की बदली हुई वास्तविकताओं को स्वीकार करना तथा हर पहलू में चीन के साथ सीधे प्रतिस्पर्धा करने के बजाय भारत की ताकत पर ध्यान केंद्रित करना महत्वपूर्ण है।**
- भारत को इस क्षेत्र के साथ एक नई संलग्नता रणनीति तैयार करनी चाहिए जो इसकी पारंपरिक शक्तियों का लाभ उठाये तथा क्षेत्र की उभरती गतिशीलता को स्वीकार करे।
- **भारत की सांस्कृतिक विरासत के पहलुओं को पुनः प्राप्त करना**
- भारत को अपनी महाद्वीपीय रणनीति में चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, लेकिन समुद्री क्षेत्र में उसके पास अनेक अवसर हैं।

Drishti IAS

- हिंद-प्रशांत क्षेत्र में अपने समुद्री लाभ का लाभ उठाने से भारत को अपनी महाद्वीपीय कमियों की भरपाई करने में मदद मिल सकती है।
- भारत को अपने छोटे दक्षिण एशियाई पड़ोसियों को भारत-प्रशांत रणनीतिक चर्चा में शामिल करना चाहिए, भले ही वे वर्तमान में इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण खिलाड़ी न हों।
- **बड़ी इंडो-पैसिफिक रणनीति के हिस्से के रूप में श्रीलंका, मालदीव और बांग्लादेश जैसे देशों के साथ साझेदारी करने से क्षेत्र में चीन के प्रभाव का मुकाबला करने में मदद मिल सकती है।**
- **को गैर-भारत केंद्रित नजरिए से** देखने की नई दिल्ली की इच्छा आम चुनौतियों से निपटने में बाहरी शक्तियों के साथ सहयोग के प्रति खुलेपन का संकेत देती है।
- **भारत अब अपने पड़ोस में बाहरी शक्तियों को लेकर उतना असहज नहीं है, जितना शीत युद्ध के दौर में था।**
- **साझा क्षेत्रीय चुनौतियों से निपटने के लिए हिंद महासागर और दक्षिण एशिया में बाहरी भागीदारों के साथ सहयोग करने की** इच्छा है ।
- इस खुलेपन और बाहरी जुड़ाव का उपयोग करके भारत की क्षेत्रीय गिरावट से उत्पन्न कठिनाइयों को कम करने में मदद मिल सकती है।

सॉफ्ट पावर टैप करें

- नई दिल्ली को **क्षेत्र में प्रभाव बनाए रखने के लिए अपनी सॉफ्ट पावर का रचनात्मक उपयोग करना चाहिए** ।
- भारत और अन्य दक्षिण एशियाई देशों में **राजनीतिक और नागरिक समाज के कलाकारों के बीच अनौपचारिक संपर्क को** प्रोत्साहित करना फायदेमंद हो सकता है।
- इस क्षेत्र में अनौपचारिक संघर्ष प्रबंधन प्रक्रियाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, खासकर **जहां भारतीय राज्य की प्रत्यक्ष भागीदारी में झिझक हो सकती है, जैसे म्यांमार में।**
- भारत के वैश्विक उत्थान और क्षेत्रीय गिरावट के बीच विरोधाभास का इसकी वैश्विक आकांक्षाओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।
- इससे यह प्रश्न उठता है कि क्या कोई देश जो अपने आसपास के क्षेत्रों में प्रभुत्व बनाए रखने में असमर्थ है, वास्तव में अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में एक केन्द्रीय शक्ति हो सकता है।

यौन अपराध और वीडियो: कर्नाटक में प्रज्वल रेवन्ना मामले पर (4 मई) (जीएस पेपर I: समाज)

कर्नाटक में यौन उत्पीड़न मामलों की संवेदनशीलता से जांच होनी चाहिए

- कर्नाटक पुलिस और राज्य प्रशासन को उन महिलाओं की सुरक्षा और गोपनीयता को प्राथमिकता देनी चाहिए, जिन्होंने जनता दल (सेक्युलर) के निलंबित नेता और सांसद प्रज्वल रेवन्ना पर बलात्कार और यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया है।
- राज्य सरकार द्वारा श्री रेवन्ना के राजनयिक पासपोर्ट को रद्द करने की मांग सहित त्वरित कार्रवाई की गई है।
- विशेष जांच दल (एसआईटी) को आरोपों की शीघ्र जांच करनी चाहिए, महिलाओं की पहचान की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए तथा कथित कृत्यों को दर्शाने वाले किसी भी वीडियो को हटाना चाहिए।

PatriotIAS

- सत्ता में बैठे व्यक्तियों द्वारा यौन दुराचार के आरोपों से जुड़े हाल के मामले असमान सत्ता गतिशीलता और राजनीतिक प्रभाव के कारण अपराधियों को जवाबदेह ठहराने की चुनौती को उजागर करते हैं।
- यौन दुर्व्यवहार के पीड़ित अक्सर सामने आने में झिझकते हैं, लेकिन शिकायत दर्ज कराने से अन्य लोगों को, विशेष रूप से लगातार अपराध करने वालों के खिलाफ, बोलने के लिए प्रोत्साहन मिलता है।
- पुलिस को वीडियो में दिख रही महिलाओं को शिकायत दर्ज कराने के लिए राजी करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।
- प्रज्वल रेवन्ना और उनके पिता एच.डी. रेवन्ना, जो विधानसभा के सदस्य हैं, दोनों को एसआईटी ने पूछताछ के लिए बुलाया है। प्रज्वल पर बलात्कार का आरोप है, जबकि उनके पिता पर एक शिकायतकर्ता के अपहरण का आरोप है।
- आरोपों की गंभीरता को देखते हुए यह सुझाव दिया गया है कि जांच पूरी होने तक दोनों नेता सार्वजनिक पद से इस्तीफा दे दें।

नीति बेमेल: अमेरिका और इज़राइल नीति पर (4 मई)

गाजा हमले रोकने के लिए कहते समय अमेरिका को इजराइल को हथियार नहीं देने चाहिए

- इज़राइल-हमास युद्ध 7 अक्टूबर को शुरू हुआ, राष्ट्रपति जो बिडेन के लिए तत्काल प्राथमिकता इस संघर्ष को क्षेत्रीय युद्ध में बढ़ने से रोकना है।
- बिडेन ने दोहरी रणनीति अपनाई: गाजा में इज़राइल की कार्रवाइयों के लिए बिना शर्त समर्थन की पेशकश, साथ ही इज़राइल और उसके पड़ोसियों के बीच तनाव कम करने के लिए राजनयिक प्रयासों में संलग्न होना।
- हालाँकि, जैसे-जैसे संघर्ष जारी रहा, जिसके परिणामस्वरूप गाजा में महत्वपूर्ण नागरिक हताहत हुए, बिडेन की नीति को चुनौतियों का सामना करना पड़ा।
- यह युद्ध कई महीनों से चल रहा है, जिसमें बड़ी संख्या में लोग हताहत हुए हैं, विशेषकर गाजा में महिलाएं और बच्चे।
- इजरायल, गाजा के एक शहर राफा पर आक्रमण करने का इरादा रखता है, जहां फिलिस्तीनियों की बड़ी आबादी है, जबकि बिडेन ने इस तरह के कदम के खिलाफ चेतावनी दी है।
- इस संघर्ष में फिलिस्तीनी क्षेत्रों और इजराइल की सीमाओं से परे भी घटनाएं हुई हैं, जिनमें लाल सागर में हौथी हमले और इजराइल और ईरान के बीच आदान-प्रदान शामिल हैं, हालांकि पूर्ण पैमाने पर क्षेत्रीय युद्ध से बचा जा सका है।
- इस युद्ध के कारण संयुक्त राज्य अमेरिका में, विशेष रूप से विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच, विरोध प्रदर्शन भड़क उठे हैं, जिससे बिडेन पर इजरायल के प्रति अपने दृष्टिकोण पर पुनर्विचार करने का दबाव बढ़ गया है।
- बाइडेन के अधिकारी इजरायल और हमास के बीच युद्ध विराम और बंधक समझौते को हासिल करने के लिए काम कर रहे हैं, जिसमें कुछ सफलता भी मिली है।

PatriotiCIAS

- इजरायल के खिलाफ ईरान के हमलों और बेंजामिन नेतन्याहू को दी गई चेतावनियों पर बिडेन की प्रतिक्रिया से क्षेत्रीय तनाव कम करने में मदद मिली।
- हालाँकि, गाजा में अंधाधुंध बमबारी के आरोपों के बावजूद अमेरिका द्वारा इजरायल को निरंतर समर्थन दिए जाने के लिए बिडेन की आलोचना की गई है।
- कुछ लोगों का तर्क है कि इजरायल पर दबाव बनाने में बिडेन की विफलता अमेरिका की नैतिक स्थिति को कमजोर करती है तथा अंतर्राष्ट्रीय और घरेलू स्तर पर उनकी स्थिति को कमजोर करती है।
- सुझावों में गाजा में स्थायी युद्ध विराम की मांग करना तथा क्षेत्र में शांति स्थापित करने के लिए इजरायल को हथियारों की बिक्री निलंबित करने जैसी नीतियों पर विचार करना शामिल है।

यह सतत विकास लक्ष्यों को पुनः पटरी पर लाने का वर्ष है (4 मई) (जीएस पेपर III: पर्यावरण)

2024 दुनिया भर में चुनाव का वर्ष है और नव निर्वाचित सरकारों को सबसे महत्वपूर्ण स्थिरता के मुद्दे पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है

- सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) पर संयुक्त राष्ट्र शिखर सम्मेलन **18-19 सितंबर को न्यूयॉर्क में हुआ** ।
- शिखर सम्मेलन का उद्देश्य एसडीजी प्राप्त करने की दिशा में हुई प्रगति का मूल्यांकन करना था।
- **2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा अपनाया गया एजेंडा-2030, 2030 तक हासिल किए जाने वाले 169 विशिष्ट लक्ष्यों के साथ 17 एसडीजी की रूपरेखा तैयार करता** है ।

- ये लक्ष्य सतत विकास के विभिन्न पहलुओं को कवर करते हैं, जिनमें **गरीबी उन्मूलन, लैंगिक समानता, पर्यावरण संरक्षण और शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच शामिल है।**
- हालांकि **एसडीजी कार्यक्रम कानूनी रूप से बाध्यकारी नहीं है** , सभी देश इन लक्ष्यों की दिशा में काम करने के लिए प्रतिबद्ध हैं क्योंकि सतत विकास को एक वैश्विक प्रयास माना जाता है।
- शिखर सम्मेलन ने देशों को अपने प्रयासों की समीक्षा करने, सफलताओं और चुनौतियों को साझा करने और एसडीजी प्राप्त करने में सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने का अवसर प्रदान किया।

धीमी प्रगति

- सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने की दिशा में प्रगति कम हो रही है।
- कोविड -19 **महामारी और अन्य वैश्विक संकटों ने स्थिति को और खराब कर दिया है।**
- धीमी प्रगति और पर्यावरणीय लक्ष्यों पर ध्यान की कमी को लेकर चिंता है।
- एसडीजी को आगे बढ़ाने के वर्तमान दृष्टिकोण की **उनकी एकीकृत प्रकृति पर विचार न करने के लिए आलोचना की जाती है।**
- मानव कल्याण और पर्यावरणीय स्वास्थ्य को संतुलित करने में विफलता से पर्यावरणीय गिरावट में तेजी आ सकती है।
- संयुक्त **राष्ट्र एसडीजी रिपोर्ट 2023 पांच प्रमुख क्षेत्रों में तत्काल कार्रवाई का सुझाव देती है।**
- विश्व नेताओं ने 2030 तक एसडीजी हासिल करने की प्रतिबद्धता दोहराई है, लेकिन ज़मीनी स्तर पर उनकी प्रभावशीलता अनिश्चित है।

परिणाम जो विचार-विमर्श के लायक हैं

- **64 विद्वानों की एक टीम ने गरीबी उन्मूलन, सामाजिक न्याय और पर्यावरण संरक्षण पर सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के राजनीतिक प्रभाव का आकलन करने के लिए 3,000 अध्ययनों का विश्लेषण किया** ।
- सितंबर 2022 में नेचर सस्टेनेबिलिटी में प्रकाशित, नीदरलैंड के यूट्रेक्ट विश्वविद्यालय के प्रोफेसर फ्रैंक बर्मन के नेतृत्व में।
- **पांच आयामों की जांच की गई: वैश्विक शासन, घरेलू राजनीतिक प्रणाली, संस्थागत एकीकरण, समावेशिता और पारिस्थितिक संरक्षण।**
- निष्कर्ष यह निकला कि सतत विकास लक्ष्यों का **मुख्य रूप से सीमित मानक और संस्थागत सुधारों के साथ विचार-विमर्श संबंधी प्रभाव था** ।
- इस बात के बहुत कम प्रमाण मिले कि वैश्विक लक्ष्य-निर्धारण का राष्ट्रीय और स्थानीय राजनीति पर सीधा प्रभाव पड़ा।
- 2030 एजेंडा की परिवर्तनकारी क्षमता को साकार करने के लिए एक व्यवस्थित दृष्टिकोण के महत्व पर बल दिया गया।
- **"भविष्य अब है" संयुक्त राष्ट्र रिपोर्ट (2019)** एक साथ कई सतत विकास लक्ष्यों को संबोधित करने के लिए प्रवेश बिंदुओं की पहचान करने का सुझाव दिया गया है।
- सतत विकास कार्यों में समझौतों का प्रबंधन करते हुए सह-लाभों को अधिकतम करने की वकालत करना।
- **शासन, अर्थव्यवस्था, व्यक्तिगत और सामूहिक कार्रवाई, तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने की सिफारिश की गई है।**

PatrioticIAS

- **स्थानीय आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के अनुरूप एकीकृत मार्गों को क्रियान्वित करने के लिए साझेदारी और सहयोग का आह्वान किया गया।**
- नॉर्वे के पूर्व प्रधानमंत्री ग्रो हार्लेम ब्रुन्डलैंड को उम्मीद है कि नीति निर्माता टिकाऊ विकास को आगे बढ़ाने के लिए रिपोर्ट के सुझावों पर ध्यान देंगे।

एक महत्वपूर्ण वर्ष

- 2024 में दुनिया भर में कम से कम 64 देशों में चुनाव होंगे।
- ये देश विकसित और विकासशील दोनों देशों का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- चुनावों में दुनिया की लगभग आधी आबादी यानी कुल 49% लोग शामिल होते हैं।
- नव निर्वाचित सरकारों के लिए स्थिरता पर विचार करना और उसके अनुसार अपनी राष्ट्रीय नीतियों को समायोजित करना महत्वपूर्ण है।
- जब सरकारें अपने एजेंडे और नीतियों को आकार देती हैं तो स्थिरता पर उनका मुख्य ध्यान होना चाहिए।
- **राष्ट्रीय नीतियों को स्थिरता लक्ष्यों के साथ संरेखित करने से दीर्घकालिक पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक कल्याण में योगदान मिल सकता है।**
- वर्तमान और भावी पीढ़ियों के लिए बेहतर भविष्य सुनिश्चित करने के लिए स्थिरता के मुद्दों को संबोधित करना आवश्यक है।

एक आजीविका खामोश (4 मई) (जीएस पेपर I: सोसायटी)

गौरक्षकों के बढ़ते ख़तरे और असहयोगी प्रशासन के कारण, राजकोट के दलित पशु-स्किनर्स अपने पेशे से बाहर हो रहे हैं

- गुजरात में पशुओं की खाल उतारने के पारंपरिक क्षेत्र राजकोट के चमड़िया पाड़ा में 3 अप्रैल को पुलिस की छापेमारी हुई।
- दो पुलिसकर्मी और चार गौरक्षक, जो स्वयं को गौरक्षक बताते थे, मंजू परमार के घर के आंगन में घुस आए।
- उन्होंने दावा किया कि उन्होंने मंजू और उसके बेटे महेश द्वारा कथित तौर पर रखा गया 100 किलो गौ मांस जब्त किया है।
- गुजरात के कड़े गौहत्या विरोधी कानून, गुजरात पशु संरक्षण (संशोधन) अधिनियम, 2017 के तहत मां और बेटे के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई।
- मंजू और महेश दलित समुदाय से हैं, जो पारंपरिक रूप से गुजरात में मवेशियों की खाल उतारने का काम करते हैं।
- पहले, राजकोट के विभिन्न हिस्सों से 500 से 600 परिवार सोखड़ा डंपिंग ग्राउंड पर काम करते थे, लेकिन विभिन्न चुनौतियों के कारण अब उनमें से कई लोग वहां से जा रहे हैं।
- स्किनर्स के सामने आने वाली चुनौतियों में कानूनी मान्यता की कमी, पहचान पत्रों का अभाव और गौरक्षकों जैसे निगरानी समूहों से खतरे शामिल हैं।
- चमड़िया पारा में चमड़े के गोदामों को ढूंढना मुश्किल है और अक्सर दृश्य से छिपे रहते हैं।

PatriotiAS

- मृत जानवर के हर हिस्से का उपयोग किया जाता है: खाल व्यापारियों को बेची जाती है, हड्डियों का उपयोग जिलेटिन के लिए किया जाता है, और गाय के सींगों का उपयोग खिलौने और बटन बनाने के लिए किया जाता है।
- मृत मवेशियों का मांस ग्रे मार्केट में सस्ते में बेचा जाता है, जो दलित परिवारों के लिए चिकन और मटन के सस्ते विकल्प के रूप में काम करता है।
- यह क्षेत्र, जो कभी मवेशियों की खाल रखने वाले गोदामों से गुलजार रहता था, अब निराशा की भावना से भर गया है, क्योंकि कई गोदाम बंद हो गए हैं।

मवेशियों की खाल उतारने के व्यापार का पतन

- पिछले साल तक, जब गाय मर जाती थी तो मवेशी की खाल उतारने वाले लोग खेतों तक जाने के लिए अपने पिक-अप ट्रक का उपयोग करते थे।
- परंपरागत रूप से, जिला मजिस्ट्रेट मृत मवेशियों, बकरियों और भेड़ों की खाल उतारने के लिए प्रत्येक जिले में पशु खाल बनाने वालों को चार्म कुंड नामक भूमि आवंटित करते थे।
- तीन पीढ़ियों से इस व्यापार से जुड़े परिवार के सुरेश राठौड़ ने खाल उतारना छोड़ दिया है और अब आजीविका के लिए यात्रियों को ढोने और सामान ढोने का काम करते हैं।
- NH27, राजकोट-अहमदाबाद राजमार्ग पर तेजी से हो रहे शहरीकरण ने सोखाडा जैसे क्षेत्रों को अपनी चपेट में ले लिया है, जिससे एक नए अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे और अन्य बुनियादी ढांचा परियोजनाओं का निर्माण हो रहा है।
- 2024 के लोकसभा चुनाव वादों के हिस्से के रूप में, हवाई अड्डे से सटे इलाकों में संपत्ति की दरें बढ़ रही हैं, जिसका असर दलित खाल बनाने वालों पर पड़ रहा है, जिन्हें अब सोखदा में मवेशियों की खाल उतारने की अनुमति नहीं है।
- राजकोट नगर निगम ने उस स्थान पर कंक्रीट की चारदीवारी खड़ी कर दी है जो कभी आकर्षण कुंड था, और गौरक्षक इस क्षेत्र में खाल उतारने की गतिविधि को हतोत्साहित करते हैं।
- सत्ताधारी दल से जुड़े स्थानीय नेता सोखादा डंपिंग ग्राउंड के निकट पार्टियों के लिए भूखंड विकसित कर रहे हैं, उनका दावा है कि दुर्गंध अस्वीकार्य है।
- हरेश परमार, एक पूर्व स्किनर, पर अवैध रूप से गाय का मांस बेचने का झूठा आरोप लगाया गया था, उसे राजकोट केंद्रीय जेल में तीन महीने बिताए गए थे, और कई बार उसकी जमानत याचिका खारिज कर दी गई थी।
- हरेश परमार को हर 15 दिन में पुलिस स्टेशन में उपस्थित होना पड़ता है, शहर नहीं छोड़ सकते और मासिक अदालत की सुनवाई में शामिल होना पड़ता है।
- दोषी पाए जाने पर उसे 10 साल तक की जेल की सजा हो सकती है।
- राजकोट के भाजपा उम्मीदवार परषोत्तम रूपाला, जो केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री भी हैं, को क्षत्रियों और दलितों के बारे में टिप्पणी के लिए विवाद का सामना करना पड़ा।
- रूपाला ने दलित समुदाय की प्रशंसा की, उन्हें सबसे अधिक उत्पीड़ित बताया, लेकिन कथित तौर पर राजनीतिक लाभ के लिए दलित भावनाओं का शोषण करने के लिए आलोचना का सामना करना पड़ा।
- राजकोट लोकसभा क्षेत्र में लगभग 22 लाख मतदाता हैं, जिनमें अनुसूचित जाति के मतदाताओं की संख्या केवल 6.9% है।
- मवेशियों की स्वच्छ खाल उतारने के लिए सोखड़ा डंपिंग ग्राउंड में आश्रय सुविधाओं की दलित मांगों को उनके अधिकारों के लिए एक दशक की लंबी लड़ाई के बावजूद, सत्तारूढ़ दल और प्रशासन द्वारा नजरअंदाज कर दिया गया है।

PatriotIAS

चरमराती गाय अर्थव्यवस्था

- गुजरात भारत के शीर्ष पांच दूध उत्पादक राज्यों में से एक है, जो कुल दूध उत्पादन में 7.49% का योगदान देता है।
- राज्य में 2 करोड़ से अधिक गायों, बैलों और भैंसों की आबादी है, जिनमें से केवल आधा ही दूध उत्पादक है।
- गायें आम तौर पर 25 साल तक जीवित रहती हैं, और बेकार होने से पहले 15 साल तक दूध का उत्पादन करती हैं।
- सुरेंद्रनगर जिले में वाधवान तालुका पांजरापोल में गैर-दुधारू मवेशियों की देखभाल की जाती है, जहां जीवन के अंत की देखभाल के लिए 20 जानवरों को अलग से रखा जाता है।
- शवों का निपटान जीतूभाई जैसे व्यक्तियों द्वारा किया जाता है, जो मवेशियों की खाल और हड्डियों के प्रसंस्करण का व्यवसाय संचालित करते हैं।
- जीतूभाई के व्यवसाय में शवों की खाल निकालना शामिल है, इस क्षेत्र में बिहार के बशीर जैसे श्रमिक कार्यरत हैं।
- खाल बाजार में मंदी देखी गई है, 2016-17 के बाद से कीमतों में काफी गिरावट आई है।
- खाल की बिक्री में गिरावट के बावजूद, मवेशियों की हड्डियों का एक फलता-फूलता बाजार है, जिन्हें कुचलकर फार्मास्युटिकल और जिलेटिन निर्माण इकाइयों को बेचा जाता है।
- हड्डी मिल व्यवसाय से आय खर्च घटाने के बाद प्रति माह ₹50,000 से ₹1 लाख तक होती है।
- मवेशियों के सींगों की मांग में कमी देखी गई है, जिससे गोदामों में ढेर लग गया है।
- जीतूभाई को उम्मीद है कि उनके बेटे अंतरराष्ट्रीय स्कूल परिसर जैसे नजदीकी विकास के कारण अपने व्यवसाय के संभावित बंद होने के डर से स्थिर, शहर-आधारित नौकरियां अपनाएंगे।

प्लास्टिक, असली हत्यारा

- बशीर उस कूड़ाघर के पास एक गाय के पेट में मिले कटे हुए प्लास्टिक को दिखाते हैं, जहां वह चरती थी।
- वधवान गांव में सड़क के किनारे कूड़े का एक बड़ा ढेर मौजूद है, जिसके आसपास अक्सर गायें देखी जाती हैं।
- नवसर्जन के कार्यकर्ता नटूभाई परमार ने एक सड़क चौराहे पर गाय की मूर्ति स्थापित की है और मृत गायों के पेट से निकाले गए 60 किलो प्लास्टिक बैग प्रदर्शित किए हैं।
- ग्रामीण लोग बचे हुए भोजन को प्लास्टिक की थैलियों में फेंक देते हैं, जिसके कारण गायें भोजन की तलाश में उसे खा जाती हैं।
- गायें, विशेषकर गर्भवती गायें, प्लास्टिक निगलने पर कष्ट उठाती हैं, जिससे प्रायः गायों और उनके बछड़ों दोनों की दर्दनाक मौत हो जाती है।
- 2017 में, दलित समुदाय ने मृत गायों के पेट से प्लास्टिक एकत्र किया और उसके नमूने 182 विधायकों को सौंपे, तथा मवेशियों के लिए पर्याप्त चरागाह की मांग की, ताकि उन्हें कूड़े के ढेर में घूमने से रोका जा सके।

भय का इतिहास

- 2016 में, मृत गायों की खाल उतारने वाले पांच दलितों को मोटा समधियाला गांव में 40 गौरक्षकों ने पीट-पीटकर मार डाला था, जिसके कारण दीव में दलित समुदाय में भय का माहौल पैदा हो गया था।

PatioIAS

- राजकोट के सोखड़ा डंपिंग ग्राउंड की खराब स्थिति पर विरोध प्रदर्शन के बाद राठौड़ और रमेश जैसे शहरी गाय के चमड़े उतारने वालों ने काम फिर से शुरू किया, लेकिन आय में गिरावट के कारण पिछले साल उन्होंने काम बंद कर दिया।
- राजकोट के पूर्व विधायक सिद्धार्थ परमार के अनुसार, दलितों पर अत्याचार और उनके काम पर प्रतिबंध अक्सर भूमि नियंत्रण के मुद्दों से जुड़े होते हैं।
- इस मुद्दे के समाधान के प्रयासों के बावजूद, जैसे कि मवेशी खाल उतारने वालों के लिए पहचान पत्र हेतु 2017 की अधिसूचना, हरेश जैसे व्यक्तियों को संभावित दुरुपयोग के आधार पर इनकार का सामना करना पड़ा।
- पुलिस को गौरक्षकों की शिकायतों की जांच करनी होती है, जिसके परिणामस्वरूप 2019 और 2024 के बीच राजकोट में गौहत्या और परिवहन से संबंधित नौ एफआईआर दर्ज की गईं।
- हालांकि अवैध रूप से गायों के परिवहन के मामले सामने आए हैं, लेकिन पारंपरिक पशु-त्वचा-उतराई करने वालों को अपना काम जारी रखने की अनुमति देने की मांग की जा रही है।

मार्च में खनन उत्पादन की वृद्धि दर घटकर 1.2% रह गई, जो आईआईपी के लिए संकेत है (4 मई) (जीएस पेपर II: विनिर्माण क्षेत्र)

आईआईपी

औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) भारतीय अर्थव्यवस्था में औद्योगिक उत्पादों के उत्पादन की भौतिक मात्रा का एक माप है।

यह एक विशिष्ट अवधि में विभिन्न उद्योग समूहों में वृद्धि दर के एक महत्वपूर्ण संकेतक के रूप में कार्य करता है। आईआईपी को राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) द्वारा मासिक रूप से संकलित और प्रकाशित किया जाता है, जो सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय का एक हिस्सा है [1]।

कोर उद्योग और आईआईपी

भारत में आठ प्रमुख उद्योग आईआईपी को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। ये उद्योग देश के आर्थिक विकास की नींव बनाते हैं और समग्र आईआईपी गणना में लगभग 40.27% का योगदान देते हैं [2]।

आईआईपी में उनके भार के अनुसार सूचीबद्ध आठ प्रमुख उद्योग हैं :

1. रिफाइनरी उत्पाद
2. बिजली
3. इस्पात
4. कोयला
5. कच्चा तेल
6. प्राकृतिक गैस
7. सीमेंट
8. उर्वरक

नवीनतम आईआईपी डेटा कहां से प्राप्त करें

भारत सरकार का प्रेस सूचना ब्यूरो (पीआईबी) आठ प्रमुख उद्योगों (आईसीआई) के सूचकांक पर जानकारी जारी करता है, जो मूल रूप से मुख्य क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देने वाला आईआईपी है। पीआईबी वेबसाइट हाल के आंकड़ों के लिए प्रेस विज्ञप्तियों के साथ-साथ मासिक और वार्षिक सूचकांकों तक पहुंच प्रदान करती है [3]।

यहां आठ प्रमुख उद्योगों के सूचकांक को समर्पित पीआईबी वेबपेज का लिंक दिया गया है: [प्रेस सूचना ब्यूरो pib.gov.in पर आठ प्रमुख उद्योगों का पीआईवाईबी सूचकांक]

PatrioticIAS

मुझे आशा है कि यह जानकारी आईआईपी और इसके मुख्य उद्योगों को समझने के लिए एक सहायक प्रारंभिक बिंदु प्रदान करेगी!

- मार्च में भारत की खनन उत्पादन वृद्धि घटकर 1.2% रह गई, जो 19 महीने का निचला स्तर है।
- फरवरी में खनन में 8% की उच्च वृद्धि दर देखी गई, जिसने समग्र औद्योगिक उत्पादन वृद्धि में योगदान दिया।
- औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) में खनन का हिस्सा 14.3% है।
- फरवरी में औद्योगिक उत्पादन की वृद्धि दर चार महीने के उच्चतम स्तर 5.7% पर पहुंच गई, जिसे खनन (8%) और बिजली (7.5%) का समर्थन प्राप्त हुआ।
- आईआईपी में 77.6% योगदान देने वाले विनिर्माण क्षेत्र में फरवरी में 5% की वृद्धि हुई।
- आठ प्रमुख क्षेत्रों की वृद्धि दर फरवरी के 7.1% की तुलना में मार्च में घटकर 5.2% रह गई।
- अर्थशास्त्रियों का अनुमान है कि औद्योगिक उत्पादन वृद्धि में और गिरावट आएगी, जो 3.5% से 5% तक होगी।
- आठ बुनियादी ढांचा क्षेत्र आईआईपी का 40.27% प्रतिनिधित्व करते हैं।
- मार्च 2023 की तुलना में मार्च के लिए खनिज उत्पादन सूचकांक में 1.2% की वृद्धि हुई।
- तांबा सांद्रण, सोना, मैंगनीज अयस्क, हीरा, ग्रेफाइट, चूना पत्थर और मैग्नेसाइट सहित कुछ गैर-ईंधन खनिजों में सकारात्मक वृद्धि देखी गई।
- वित्त वर्ष 2024 में खनन उत्पादन में 7.5% की वृद्धि हुई, जो 2022-23 में दर्ज 5.8% की वृद्धि से अधिक है।
- वर्ष के दौरान लौह अयस्क, चूना पत्थर और एल्यूमीनियम उत्पादन ने क्रमशः 7.4%, 10.7% और 2.1% की वृद्धि के साथ नए रिकॉर्ड हासिल किए।

PatriotICAS

प्रश्न 1: विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक (डब्ल्यूपीएफआई) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें: (ए) यह संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) द्वारा प्रकाशित एक वार्षिक रैंकिंग है। (बी) यह बहुलवाद, मीडिया स्वतंत्रता और पत्रकारों की सुरक्षा के आधार पर 180 देशों में प्रेस स्वतंत्रता की स्थिति का आकलन करता है। (सी) डब्ल्यूपीएफआई पर उच्च स्कोर प्रेस की स्वतंत्रता पर अधिक प्रतिबंध का संकेत देता है। ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं? (ए) केवल (ए) (बी) केवल (बी) (सी) केवल (सी) (डी) (बी) और (सी)	उत्तर: (बी) केवल (बी) **स्पष्टीकरण:** (a) - गलत। WPFI का प्रकाशन यूनेस्को द्वारा नहीं, बल्कि रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स (RSF) द्वारा किया जाता है। (बी) - सही। डब्ल्यूपीएफआई बहुलवाद, मीडिया की स्वतंत्रता और पत्रकारों की सुरक्षा जैसे कारकों पर विचार करता है। (c) - गलत। WPFI पर उच्च स्कोर अधिक प्रेस स्वतंत्रता को दर्शाता है।
प्रश्न 2: विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक (डब्ल्यूपीएफआई) के संदर्भ में, किसी देश की रैंकिंग के लिए निम्नलिखित में से कौन सा/से कारक नहीं माना जाता है? (क) सरकारी सेंसरशिप का स्तर (बी) मीडिया स्वामित्व की विविधता	उत्तर: (ग) देश का आर्थिक विकास **स्पष्टीकरण:** डब्ल्यूपीएफआई का ध्यान सीधे तौर पर प्रेस की स्वतंत्रता को प्रभावित करने वाले कारकों पर केंद्रित है, न कि किसी राष्ट्र के समग्र आर्थिक विकास पर।

(ग) देश का आर्थिक विकास (घ) पत्रकारों को ऑनलाइन धमकियाँ और उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है	
प्रश्न 3: सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने का लक्ष्य वर्ष है: (ए) 2020 (बी) 2025 (सी) 2030 (घ) 2035	उत्तर: (सी) 2030 **व्याख्या:** संयुक्त राष्ट्र ने सतत विकास लक्ष्यों को 2015 में अपनाया था तथा इन्हें प्राप्त करने का लक्ष्य 2030 रखा गया था।
प्रश्न 4: निम्नलिखित में से कौन सा सतत विकास लक्ष्यों में से एक नहीं है? (क) गरीबी और भुखमरी का उन्मूलन (बी) सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा तक पहुंच सुनिश्चित करना (ग) सतत विकास के लिए शांतिपूर्ण और समावेशी समाज को बढ़ावा देना (डी) लैंगिक समानता हासिल करना और सभी महिलाओं और लड़कियों को सशक्त बनाना	उत्तर: उपरोक्त में से कोई नहीं (ए, बी, सी और डी) सभी एसडीजी हैं। **स्पष्टीकरण:** सूचीबद्ध सभी विकल्प वास्तव में एसडीजी हैं। कुल मिलाकर 17 एसडीजी हैं, जिनका लक्ष्य विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करना है।
प्रश्न 5: सूची I (एसडीजी) को सूची II (लक्ष्य) से मिलाएं और सही उत्तर चुनें: सूची I (एसडीजी) (ए) एसडीजी 3 (बी) एसडीजी 6 (सी) एसडीजी 13 (डी) एसडीजी 15 सूची II (लक्ष्य) 1. लैंगिक समानता हासिल करना और सभी महिलाओं और लड़कियों को सशक्त बनाना 2. सभी के लिए सस्ती, विश्वसनीय, टिकाऊ और आधुनिक ऊर्जा तक पहुंच सुनिश्चित करें 3. जलवायु परिवर्तन और उसके प्रभावों से निपटने के लिए तत्काल कार्रवाई करें 4. सभी आयुवर्ग के लोगों के लिए स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करना और कल्याण को बढ़ावा देना 5. स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र के सतत उपयोग को संरक्षित, पुनर्स्थापित और बढ़ावा देना	**स्पष्टीकरण:** एसडीजी 3: सभी आयु वर्गों के लिए स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करना और कल्याण को बढ़ावा देना (4) एसडीजी 6: सभी के लिए जल एवं स्वच्छता की उपलब्धता एवं स्थायी प्रबंधन सुनिश्चित करना (मिलान नहीं हुआ) एसडीजी 13: जलवायु परिवर्तन और उसके प्रभावों से निपटने के लिए तत्काल कार्रवाई करें (3) एसडीजी 15: स्थलीय पारिस्थितिकी प्रणालियों के सतत उपयोग को संरक्षित, बहाल और बढ़ावा देना, वनों का स्थायी प्रबंधन करना, मरुस्थलीकरण से निपटना, भूमि क्षरण को रोकना और उलटना, तथा जैव विविधता की हानि को रोकना (5)
प्रश्न 6: औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) किसके द्वारा संकलित और प्रकाशित किया जाता है? (ए) भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) (ख) वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय (सी) केंद्रीय सांख्यिकी संगठन (सीएसओ) (डी) नीति आयोग	उत्तर: (सी) केंद्रीय सांख्यिकी संगठन (सीएसओ) **स्पष्टीकरण:** सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के तहत केंद्रीय सांख्यिकी संगठन (सीएसओ), आईआईपी को संकलित और प्रकाशित करने के लिए जिम्मेदार है।
प्रश्न 7: भारत में आईआईपी की गणना के लिए वर्तमान में किस आधार वर्ष का उपयोग किया जाता है?	उत्तर: (सी) 2011-12

PatriotiCIAS

(ए) 2004-05 (बी) 2010-11 (सी) 2011-12 (डी) 2015-16	**स्पष्टीकरण:** आईआईपी की गणना के लिए आधार वर्ष को अप्रैल 2017 में 2004-05 से संशोधित कर 2011-12 कर दिया गया था।
प्रश्न 8: निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र IIP में शामिल नहीं है? (ए) कृषि (बी) विनिर्माण (सी) खनन (डी) बिजली	उत्तर: (ए) कृषि **स्पष्टीकरण:** IIP औद्योगिक क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करता है और कृषि को बाहर करता है। इसमें तीन व्यापक श्रेणियां शामिल हैं: विनिर्माण, खनन और बिजली।
प्रश्न 9: उच्च सकारात्मक IIP वृद्धि दर इंगित करती है: (ए) औद्योगिक उत्पादन में स्थिरता (बी) औद्योगिक उत्पादन में गिरावट (सी) औद्योगिक उत्पादन में मंदी (डी) औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि	उत्तर: (डी) औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि **स्पष्टीकरण:** सकारात्मक आईआईपी वृद्धि दर पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में उत्पादन की भौतिक मात्रा में वृद्धि को दर्शाती है। सकारात्मक वृद्धि दर जितनी अधिक होगी, औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि उतनी ही अधिक होगी।

PatrioticIAS